शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (157-164), Jan-March 2019

भारतीय अर्थव्यवस्थाः सतत् विकास की ओर

डॉ0 (श्रीमती) मन्जू मगन
वी.वी .पी.जी कालेज, शामली
ई–मेल – manjumagan2010@gmail.com

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर होकर सतत विकास की ओर है। सतत विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है जो निरन्तर चलता रहे, अर्थात् यह एक ऐसी प्रकिया है जिसमें उपलब्ध साधनों का प्रयोग इस प्रकार से हो कि वर्तमान आवश्यक्ताओं को पूरा करने के लिए भावी पीढ़ी की जरूरतों में कमी न करनी पड़े। सतत् विकास की प्रकिया में आगे रहने के लिए भारत को जनसंख्या स्थिरीकरण बनाये रखने की कोशिश करनी होगी। साथ ही नवीन प्रोद्योगिकी को अपनाते हुए, शिक्षा का प्रचार प्रसार करते हुए आम जनता की सोचने की प्रवृत्ति मे परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का उपयुक्त प्रयोग करना होगा। इस प्रकार भारत में सतत् विकास अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

मुख्य शब्द– *सकल मूल्यवर्द्धन, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पैट्रोलियम, आयल और लुबरीकैन्ट।*

प्रस्तावना

ब्रिटिश शासन की विभिन्न शोषणकारी नीतियो एंव गरीबी और बेरोजगारी के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था ऐसी स्थिति में आ गई थी कि सन् 1947 में जब देश को स्वतन्त्रता मिली, उस समय देश का आर्थिक ढाँचा अत्यन्त क्षीण हो गया था। स्वतन्त्रता मिलते ही भारत में विकास प्रकिया को प्रोत्साहन मिला और आज भारत विश्व की विकसित अर्थव्यवस्थाओं में अपनी पहचान बना चुका है। भारतीस अर्थव्यवस्था तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर होकर सत्त विकास की ओर है। सत्त विकास से तात्पर्य ऐसे विकास से है जो निरन्तर चलता रहे, अर्थात् यह एक ऐसी प्रकिया है जिसमें उपलब्ध साधनों का प्रयोग इस प्रकार से हो कि वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भावी पीढ़ी की जरूरतों में कमी न करनी पड़े।

परिकल्पनाये

1. देश के सत्त विकास मे विभिन्न क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र के अंश में गिरावट हुई है।
2. उद्योग विशिष्ट सुधार पहलों से देश में समग्र औद्योगिक माहोल में सुधार हुआ है।
3. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) अर्थव्यवस्था का वित्त पोषण का महत्वपूर्ण स्त्रोत रहा है।
4. भारत के वस्तुगत निर्यातो में धनात्मक वृद्वि से विकास पर घनात्मक प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत के सतत् विकास में सहायक महत्वपूर्ण तथ्यों का विवेचन करना।

2. भारत के सतत् विकास मे अवरोधक तथ्यों का अध्ययन करना।
3. विश्व में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति का आकलन करना।
4. भारत के सतत् विकास में तीव्रगति मे वृद्वि हेतु उपाय सुझाना।

सीमायें

1. अध्ययन द्वितीयक समंको पर अधारित है अतः द्वितीयक समंको सम्बन्धी सभी सीमाये लागू होती है।
2. यह एक समष्टि परक अध्ययन है।
3. समय–सीमा के कारण भारत के सत्त विकास मे सभी सहायक तथ्यों का विस्तार से विवेचन सम्भव नहीं है।
4. सतत् विकास के सभी अवरोधक तथ्यों का भी विस्तार से विवेचन सम्भव नही है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था सत्त विकास की ओर अग्रसर है। अर्थव्यवस्था के विकास के साथ उसके सकल मूल्य वर्द्वन (GVA) के कृषि के अंश में परिवर्तन पिछले कुछ वर्षों से देखा जा रहा है। कृषि क्षेत्र के जीवीए में पशुघन की हिस्सेदारीमें 2011–12 के पश्चात वृद्वि हो रही है। फसल क्षेत्र की हिस्सेदारी घट रही है। कृषि एंव सम्बन्धित क्षेत्रों में वृद्वि तथा देश के कुल (GVA) में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में वृद्वि तथा देश के कुल (GVA) में कृषि एंव सम्बन्धित क्षेत्रो का योगदान तालिका संख्या 1 से प्रदर्शित है।

तालिका संख्या 1

कृषि एंव सम्बन्धित क्षेत्रों मे जीवीए में वृद्वि प्रतिशत एंव योगदान

	कृषि एंव सम्बन्धित क्षेत्रों में जीवीए में वृद्वि प्रतिशत (2011–12 के मूल्य स्तर पर)	कृषि एंव सम्बन्धित क्षेत्रों का देश के कुल जीवीए में योगदान (प्रतिशत प्रचलित मूल्यों पर)
2012–13	1.5	18.2
2013–14	5.6	18.6
2014–15	–0.2	18.0
2015–16	0.7	17.5
2016–17(अनतिम)	4.9	17.4
2017–18 (अग्रिम अनुमान)	2.1	16.4

स्त्रोतः आर्थिक समीक्षा 2017.18

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2012–2013 में भारत के कुल जीवीए में कृषि एंव सम्बन्धित क्षेत्रों का योगदान 18.2 प्रतिशत था, जो वर्ष 2017–18 में घटकर 16.4 प्रतिशत रह गया है। कृषि क्षेत्र की आन्तरिक संरचना में यह परिवर्तन कुछ ही वर्षों में हुआ है।

वर्ष 2014 से भारत सरकार द्वारा उद्योगों में सुधार हेतु किये गये प्रयासों से देष की ओद्योगिक छवि में सुधार हुआ है, जिससे भारत, विश्व बैक की (Doing Business Report) डूइंग बिजनेस रिपोर्ट 2018 में 30 रैंक उछल गया है। आर्थिक समीक्षा के अनुसार उद्योग क्षेत्र के विभिन्न उपक्षेत्रों का देश के GVA में योगदान एंव इन क्षेत्रों मे GVAमें वृद्वि तालिका संख्या 2 से देखी जा सकती हैः

तालिका संख्या 2

उद्योग क्षेत्र के विभिन्न उपक्षेत्रों का देश के जीवीए में योगदान व इन क्षेत्रों में जीवीए में वृद्वि

क्षेत्र/ उपक्षेत्र	2016–17 में जीवीए में योगदान	वृद्वि कर दर (प्रतिषत)			
		2015–16	2016–17	2017–18	
				Q_1	Q_2
खनन	3.0	10.5	1.8	–0.7	5.5
विनिर्माण	18.1	10.8	7.9	1.2	7.0
विद्युत,गैस , जलापूर्ति एवं अन्य उपयोगिता सेवाए	2.2	5.0	7.2	7.0	7.6
निर्माण	8.0	5.0	1.7	2.0	2.6
उद्योग	31.2	8.8	5.6	1.6	5.8

स्त्रोतः आर्थिक समीक्षा 2017.18

उपरोक्त तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि वर्ष 2016–17 में देश के जीवीए में उद्योग क्षेत्र का योगदान 31.2 प्रतिशत था, जो कि वर्ष 2017.18 में द्वितीय तिमाही मे बढकर 5.8 प्रतिशत हो गया है। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति तालिका द्वारा स्पष्ट है।

आठ कोर उद्योगो में भी वृद्वि दृष्टिगोचर होती है। आठ कोर उद्योग इस प्रकार हैः– कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक इस्पात, सीमेंट व विद्युत। आर्थिक समीक्षा के अनुसार कच्चा तेल एंव उर्वरक के उत्पादन में 0.2 व 1.1 प्रतिशत गिरावट 2017–18 के प्रारम्भिक आठ महीनो (अप्रैल–नवम्बर 2017) में दिखाई दी, किन्तु अन्य सभी छः उद्योगो के निष्पादन में वृद्वि दृष्टिगोचर हुई हैं। जैसा कि तालिका संख्या 3 से स्पष्ट हैः–

तालिका संख्या–3

आठ कोर उद्योगों की वृद्वि दरें (आधार वर्ष 2011–12)

क्षेत्र	2016–17	(वृद्वि दर प्रतिशत में) 2017–18 (अप्रैल नवम्बर)
कोयला	3.2	1.5
कच्चा तेल	–2.5	–0.2
प्राकृतिक	–1.0	4.4
रिफायनरी उत्पाद	4.9	3.6
उर्वरक	0.2	–1.1
इस्पात	10.7	7.2
सीमेंट	–1.2	0.6
विद्युत	5.8	4.9
सम्पूर्ण सूचकांक	4.8	3.9

स्त्रोतः आर्थिक समीक्षा 2017.18

सदैव से ही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अर्थव्यवस्था के वित्तपोषण का महत्वपूर्ण स्त्रोत रहा है। आर्थिक समीक्षा 2017.18 के अनुसार देश में FDI का कुल अन्तर्प्रवाह 55.56 अरब डॉलर था,

जो 8 प्रतिशत बढ़कर 2016.17 मे 60.08 अरब डालर हो गया, जो कि अब तक का सर्वोच्च अर्न्तप्रवाह है। आर्थिक समीक्षा के अनुसार वर्ष 2016.17 में भारत में FDI अन्तर्प्रवाह मे सर्वाधिक योगदान करने वाले तीन देश क्रमशः मॉरिशस, सिगांपुर व जापान रहे हैं, जिनका FDI इक्विटी अन्तर्प्रवाह क्रमशः 36.17 प्रतिशत 20.03 प्रतिशत व 10.83 प्रतिशत रहा है।

आर्थिक समीक्षा 2017.2018 के अनुसार वर्ष 2001 में देश में सड़कों की कुल लम्बाई 33,73,520 किमी. थी, जिस पर 55 मिलियन वाहन थे। वर्ष 2016 में सड़कों की कुल लम्बाई बढ़कर 56,17,812 किमी हो गई। इस प्रकार भारतीय सड़को पर दुपहिया वाहनों की सवारी कारो, जीपो व टैक्सियों का हिस्सा जहाँ बढ़ा है, वही सार्वजनिक परिवहन इस अवधि में कम हो गया है।

आर्थिक समीक्षा में यह भी स्पष्ट है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था मे भी तेजी दिखाई दे रही है। भारत का विदेशी व्यापार का क्षेत्र भी वर्ष 2017.18 में सुदृढ रहा है। दो वर्षों की ऋणात्मक वृद्वि के पश्चात 2016.17 मे भारत के वस्तुगत निर्यातों में धनात्मक वृद्वि हुई । वर्ष 2016.17 में भारत के कुल वस्तुगत निर्यात 275.9 अरब डॉलर व आयात : 384.4 अरब डालर के रहे, जिससे व्यापार शेष 108.5 अरब डालर से प्रतिकूल रहा। भारत के भुगतान सन्तुलन की स्थिति 2013. 14 से ही काफी अच्छी है।

तालिका संख्या:4

भारत के वस्तुगत निर्यात एवं आयात

	2016–17		2017–18(अप्रैल दिसम्बर)	
	मूल्य (Value) (अरब डॉलर)	पूर्व वर्ष की तुलना में वृद्वि(प्रतिशत)	मूल्य (Value) (अरब डॉलर)	पूर्व वर्ष की तुलना में वृद्वि (प्रतिशत)
कुल वस्तुगत निर्यात	275.9	5.2	223.5	12.1
पीओएल	31.5	3.1	26.7	18.5
पीओएल भिन्न निर्यात	244.3	5.4	196.8	11.2
कुल वस्तुगत आयात	384.4	0.9	338.4	21.8
पीओएल आयात	87.0	4.8	76.1	24.2
पीओएल भिन्न आयात	297.4	−0.2	262.2	21.1
सोना व चांदी आयात	29.4	−17.3	29.1	52.0
पीओएल भिन्न व सोना चांदी भिन्न आयात	268.0	2.1	233.2	18.1
व्यापार शेष (BOT)	−108.5	−8.6	−114.9	46.4

स्त्रोतः आर्थिक समीक्षा 2017.18

भारत के बाह्य सैक्टर मे हुए विकास की एक मुख्य विशेषता रूपए एंव डॉलर की विनिमय दर में स्थिरता एंव वर्ष के दौरान उतार चढाव की कमी रही है। 2011.12 से 2013.14 तक अमेरीकी डॉलर की तुलना मे भारतीय रूपये के मूल्य मे 21 प्रतिशत मूल्य ह्रास हुआ था, जबिक वर्ष 2014.15 व 2016.17 के बीच इसमें 8.3 प्रतिशत मूल्य ह्रास हुआ था। जबकि वर्ष 2014.15 व 2016.17 के बीच हमसे 8.3 प्रतिशत का मूल्य ह्रास हुआ है। अमेरीकी डॉलर व भारतीय रूपये के बीच औसत विनिमय दर तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है–

तालिका संख्या:5

वित्तीय वर्ष	रूपए/ डॉलर बीच विनियम दर (रूपए प्रति डॉलर) (वर्ष का औसत)
2011–12	47.92
2012–13	54.41
2013–14	60.50
2014–15	61.14
2015–16	65.46
2016–17	67.07
2017–18 (दिसम्बर के अन्त तक)	64.49

स्त्रोतः आर्थिक समीक्षा 2017.18

उपरोक्त तालिका के संदर्भ मे यह भी उल्लेखनीय है कि 2018.19 में अमरीकी डॉलर की तुलना में भारी गिरावट देखी गयी है सितम्बर 2018 में डॉलर का मूल्य 70 रूपये प्रति डालर से भी अधिक हो गया है।

आर्थिक समीक्षा 2017.18 के अनुसार दिसम्बर 2017 के अन्त तक भारत के आरक्षित विदेशी मुद्रा कोष 409.4 अरब डॉलर थे, जो दिसम्बर 2016 मे 358.9 अरब डॉलर थे। इस प्रकार 2017 में विदेशी मुद्रा कोष मे 14.1 प्रतिशत की वृद्वि हुई। 12 जनवरी 2018 को विदेशी मुद्रा कोष 413.8 अरब डालकर हो गया।

भारतीय अर्थव्यवस्था अब विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्थाः मुदा कोष रिपोर्ट

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की अप्रैल 2018 की वर्ल्ड इकोनोमिक आउटलुक (WEO) रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था 2017 में विश्व में छठी बड़ी अर्थव्यवस्था हो गई थी। अप्रैल 2018 में जारी WEO रिपोर्ट में 2017 में भारत का जीडीपी 2.61 ट्रिलियन डॉलर (प्रचलित मूल्यों पर) बताया गया था, जिससे जीडीपी के मामले में फ्रांस (2.58 ट्रिलियन डॉलर) को पीछे छोडकर छठा स्थान इसका रहा। 2016 में भारत का फ्रांस के बाद सातवाँ स्थान रहा था। रिपोर्ट में 2017 में विश्व की 10 बड़ी अर्थव्यवस्था क्रमश अमरीका, चीन, जापान जर्मनी यूनाइटेड किगडम, भारत, फ्रांस, ब्राजील, इटली व कनाडा बताई गई है।

सतत् विकास में मुख्य अवरोधक तत्व एवं सुझाव

1.जनसंख्या

संयुक्त राष्ट्र संघ के आर्थिक एंव सामाजिक मामलों के विभाग ने वैश्विक जनसंख्या के संदर्भ मे अपनी द्विवार्षिक रिपोर्ट जून 2017 में जारी की है। वर्ल्ड पापुलेशन प्रास्पेक्टसः द 2017 रिवीजन शीर्षक से जारी रिपोर्ट के अनुसार 141 करोड़ जनसंख्या के साथ चीन वर्तमान में सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है, जबिक दूसरे स्थान पर भारत (133.9 करोड जनसंख्या) व तीसरे स्थान पर सयुक्त राज्य अमेरीका (32.4 करोड जनसंख्या) है। जिस गति से विभिन्न देशों मे जनसंख्या मे वृद्वि हो रही है, इससे 2024 में ही भारत की जनसंख्या चीन से अधिक हो

जायेगी। तीव्र जनसंख्या वृद्वि के साथ भारत मे सतत् विकास की गति को कायम रखना एक बड़ी चुनौती है।

भारत की 15वी जनगणना 2011 में सम्पन्न हुई है। इस जनगणना के धर्म आधारित आकड़े देश के महापंजीयक व जनगणना आयुक्त ने 25 अगस्त 2015 को जारी किये है। विभिन्न धर्मानुसार जनसंख्या सम्बधी ऑकड़े तालिका संख्या 6 में प्रदर्शित है:

तालिका संख्याः6

विभिन्न धर्मो की जनसख्या एक दृष्टि में

धर्म	2001		2011		
	जनसंख्या (करोड़ में)	कुल जनसंख्या में प्रतिशत भाग	जनसंख्या में प्रतिशत	कुल जनसंख्या में प्रतिशत	2001–11 के दशक में जनसंख्या में वृद्धि (प्रतिशत में)
हिन्दु	82.76	80.5	96.63	79.8	16.76
मुस्लिम	13.82	13.4	17.22	14.2	24.6
ईसाई	2.41	2.3	2.78	2.3	15.5
सिख	1.92	1.9	2.08	1.7	8.4
बौद्व	0.80	0.8	0.84	0.7	6.1
जैन	0.42	0.4	0.45	0.4	5.4
अन्य	0.66	0.6	0.79	0.7	
धर्म अघोषित	0.07	0.1	0.29	0.2	
योग	102.86	100.0	121.08	100.0	17.7

तालिका संख्या 6 से स्पष्ट है कि 2001.11 के दशक में देश में कुल जनसंख्या वृद्वि17. 7 प्रतिषत रही थी देश की मुस्लिम जनसंख्या मे इस अवधि मे वृद्वि 24.6 प्रतिशत वृद्वि हुई है। जबकि हिन्दु जनसंख्या में यह वृद्वि 16.76 प्रतिशत है 2001 मे भी हिन्दू जनसंख्या मे 19.9 प्रतिशत व मुस्लिम जनसंख्या में 29.52 प्रतिशत वृद्वि देखी गयी है। प्रत्येक सम्प्रदाय, धर्म में केवल दो बच्चो तक ही भारतीय नागरिकता दिये जाने सम्बंधी कठोर नियम बनाये जाने की आवश्यकता है।

2. बेरोजगारी

भारत में प्रायः शिक्षित बेरोजगारी, मौसमी बेरोजगारी, ग्रामीण बेरोजगारी दिखाई देती है। भारत के श्रमिको में महिलाओ का महत्तवपूर्ण स्थान है। लगभग आधी जनसख्या महिलाओं के होते हूए भी महिलाओं की कार्य सहभागिता दर मे निरन्तर कमी होती जा रही है। लेबर ब्यूरों शिमला द्वारा प्रकाशित 2015.16 के बरोजगारी के आंकड़े तालिका संख्या 7 में प्रदर्शित है।

तालिका संख्याः7

	बेरोजगारी की दरें प्रतिशत में			
क्षेत्र	पुरूष	महिला	विशेत लिगी	कुल व्यक्ति
ग्रामीण	4.2	7.8	2.1	5.1
नगरीय	3.3	12.1	10.3	4.9
ग्रामीण तथा नगरीय	4.0	8.7	4.3	5.0

स्त्रोतः वार्षिक रोजगार एंव बेरोजगार सर्वेक्षण रिपोर्ट 2015.16 लेबर ब्यूरो शिमला।

यह भी उल्लेखनीय है कि यद्यपि भारत मे जनसंख्या में तीव्रगति से वृद्वि हुई है, तथापि यह वृद्वि भारत के विकास के लिए अनुकूल कही जा सकती है। इसका कारण यह है कि भारतीय जनसंख्या की संरचना इस समय ऐसी है जिसमे कार्यशाली जनसंख्या का अनुपात अधिक है, यदि इसे उपयुक्त कार्य में लगाया जाये। तालिका संख्या 8 देश की कुल जनसंख्या मे विभिन्न आयुवर्ग की जनसंख्या का अनुपात प्रदर्शित करती हैः

तालिका संख्या : 8

देश की कुल जनसख्या में विभिन्न आयु वर्ग की जनसंख्या का अनुपात		
आयु वर्ग(वर्ष)	प्रतिषत	
	2011 (वास्तविक)	2026(प्रक्षेपित)
0–15	30.76	23.4
15–60	60.29	64.3
60 से अधिक	8.95	12.4
	100	100

स्त्रोतः जनगणना 2011

तालिका संख्या 8 से स्पष्ट है कि देश में इस समय 15 से 60 आयु वर्ग की जनसंख्या 60.29 प्रतिशत है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें सही प्रकार से उत्पादक कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जाये। नई रोजगार नीति का सृजन किया जाए। शिक्षा को रोजगार के साथ जोड़ते हुए उच्च शिक्षा के उसी क्षेत्र में विधार्थियो को प्रवेश दिया जाये, जिसमें रोजगार की गारन्टी हो। लोगो को शारीरिक श्रम का महत्व बताते हुए उन्हे शारीरिक श्रम की ओर उन्मुखबनाने के लिए न्यूनतम मजदूरी की दरों को अधिक बढ़ा दिया जाये। महिलाओं को भी कार्योन्मुख बनाने के लिए उन्हे आंशिक रोजगार (Part time) दिया जाये, ताकि वे कार्य के साथ–साथ घर व बच्चों की भी उपयुक्त देखभाल कर सके। प्रत्येक महिला के लिए 2 से 4 घंटे का श्रमदान अनिवार्य किया जाये। अन्यथा की स्थिति में आधी कार्यशील जनसंख्या बेकार होकर सतत् विकास मे अपना योगदान देने से वंचित रह जायेगी।

3. धन एंव आय के वितरण में असमानता

भारत में धन तथा आय के वितरण में भारी असमानता पाई जाती है। राष्ट्रीय न्यादर्श सर्वेक्षण के आंकडों के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या के 39 प्रतिशत लोगों के पास ग्रामीण लोगों के पास ग्रामीण परिसम्पत्ति का केवल 5 प्रतिशत अंश पाया जाता है, जबकि दूसरी ओर 8 प्रतिशत परिवारों के पास कुल ग्रामीण परिसम्पत्ति का 46 प्रतिशत भाग विद्यमान है। शहरों में आर्थिक असमानता गांव की अपेक्षा और भी अधिक है। इस संदर्भ में भी कड़े कानून बनाये जाने की आवश्यकता है। करारोरपण की ऊँची दरे, प्रगतिशील दरें सरकार द्वारा लगाई गयी हैं, किन्तु अभी सम्पत्ति की अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की गयी है। सम्पत्ति क्रय पर कड़े कानून बनाकर और परिसम्पत्ति की अधिक्तम सीमा निर्धारित करके धन और आय के वितरण मे

असमानता को कम किया जा सकता है।

4. निम्न प्रति व्यक्ति आय स्तर

भारत में प्रति व्यक्ति आयका स्तर बहुत नीचा है, स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय लोगों के कल्याण को अच्छा सूचक माना जाता है। आर्थिक समीक्षा के अनुसार 2015.16 में प्रति व्यक्ति आय 77,803/– थी जो 2017.18 मे रू 86,660 हो गयी। इस प्रकार इसमे 5.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्वि का अनुमान किया गया। यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यह है कि भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद विश्व औसत के 14 प्रतिशत के बराबर है, जो कि अमरीका की प्रति व्यक्ति आय की तुलना मे लगभग 1/31 भाग है। अतः भारत में प्रति व्यक्ति आय का स्तर बढ़ाने की आवश्यकता है, जो कि रोजगार के बेहतर अवसरों द्वारा सम्भव है।

5. बचत एंव निवेश में गिरावटः

किसी भी अर्थव्यवस्था में बचतें परिवारों, निजी निगम क्षेत्र तथा सामान्य प्रशासन सहित सरकारी क्षेत्र द्वारा की जाती है। वर्ष 2011.12 से 2015.16 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था में बचतों में गिरावट देखी गयी है, आर्थिक समीक्षा की रिपोर्ट से यह स्पष्ट है कि 2014.15 से 2017.18 बीच यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था ने उच्च वृद्वि देखी है तथापि बचत एंव निवेश की स्थिति में गिरावट की प्रवृत्ति बन रही है। सकल बचत दर 2011.12 मे 34.6 प्रतिशत से घटकर 2013–14 मे 32.1 प्रतिशत रह गई, जिसके बाद यह लगभग स्थिर रही है बचतों की दर में गिरावट की तुलना में निवेश का घाटा (सेविंग–इन्वेस्टमैन्ट गैप) अपेक्षाकृत कम रहा है। विकास हेतु बचत व निवेश दोनों में वृद्वि करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारत में सतत् विकास के लिए सरकार के द्वारा विभिन्न प्रयास अनेक प्रकार की योजनाओं को क्रियान्वित करके किये जाते रहे हैं, जिनकी सफलता के लिए जनता की सहभागिता की अत्यन्त आवश्यकता है। विश्व स्तर पर सभी देशों के द्वारा सतत् विकास हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर होती हुई विश्व मे अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रही है। सतत् विकास की प्रकिया में आगे रहने के लिए भारत को जनसंख्या स्थिरीकरण बनाये रखने की कोशिश करनी होगी। साथ ही नवीन प्रोद्योगिकी को अपनाते हुए, शिक्षा का प्रचार प्रसार करते हुए आम जनता की सोचने की प्रवत्ति में परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनो का उपयुक्त प्रयोग करना होगा। इस प्रकार भारत में सतत् विकास अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल ए.एन. (1995) *"Indian Economy:Problems of Development and Planning"* विश्व प्रकाशन, पूना।
2. प्रसाद, एल. (2008) *'आधुनिक भारत'* अर्चना पब्लिकेशन प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
3. उमा कपिला (2016) *'Indian Economy: Performance and Policies'* Academic Foundation New Delhi
4. *आर्थिक समीक्षा* (2017.18) सरकारी प्रकाशन नई दिल्ली।